Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 02, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.02.02.31
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 2.13

मीरा पाठ और पाठ

निरंजन राय
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
बैसवारा डिग्री कालेज लालगंज, रायबरेली

मध्यकालीन संत–भक्त कवियों में जिस रचनाकार के ऊपर काफी देर से हिंदी आलोचना में गंभीरता से प्रयास हुआ उसमें संत भक्त कवयित्री मीराबाई का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। सरसरी तौर पर देखें तो मीरा का ज्ञान और प्रचारित जीवन गढ़ा हुआ मालूम पड़ता है। मीरा के छवि निर्माण का यह काम शताब्दियों तक निरंतर लोक और शास्त्र दोनों की तरफ से होता चला आया है। मीरा के छवि निर्माण का यह कार्य मीरा के जीवन काल में ही शुरू हो गया था। उनके साहस और विरोध के इर्द–गिर्द लोक ने कई कहानियां गढ़ डाली थी। बाद में इन्हीं कहानियों को धार्मिक आख्यान कारों ने अपने ढंग से नया रूप देकर के लिपिबद्ध भी किया। इतिहास में पहली बार मीरा की रहस्यवादी और रोमनी संत भक्त और कवयित्री की छवि का निर्माण करने का काम उपनिवेश काल में कर्नल जेम्स टाड द्वारा किया जाता है। मीरा के जीवन से संबंधित इनकी दो पुस्तकों का हवाला दिया जा सकता है। करनल टाड की पहली पुस्तक है 'एनल्स एंड इक्विटीज ऑफ राजस्थान' और दूसरी इनके यात्रा वृतांत की पुस्तक 'ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इंडिया' में मीरा का उल्लेख वह एक रहस्यवादी संतभक्त और रूमानी कवयित्री के रूप में करते हैं। कर्नल टाड की परियोजना उद्देश्य उपनिवेशवादी छवि मीरा के बारे में यह होता हुआ दिखाई पड़ता है। मीरा के इस छवि निर्माण की परियोजना की हकीकत पड़ताल मीरा साहित्य के निर्माण की वरिष्ठ आलोचक माधव हाडा ने की है। वे लिखते हैं ''मीरा की या छवि यथार्थपरक और इतिहास समस्त नहीं थी। इसमें उसके जागतिक अस्तित्व के संघर्ष और अनुभव को अनदेखा किया गया था, लेकिन टाड के प्रभावशाली व्यक्तित्व और टाड से ने इसे मान्य बना दिया। मीरा के इस छवि निर्माण में यूरोप के राजनीतिक और सैद्धांतिक हितों और राजपूताना के सामंतों और उनके अतीत के संबंध में तट के व्यक्तिगत पूर्वाग्रह की महत्वपूर्ण भूमिका उपनिवेश काल और बाद में राजस्थान की मेवाड़ और मारवाड़, रियासतों में भी इतिहास लेखन के लिए विभाग कायम हुए और इनमें टाड से प्रभावित प्रेरित श्यामलाल दास, गौरी शंकर हीराचंद ओझा और मुंशी देवी प्रसाद जैसे देसी विद्वानों को इतिहास लेखन का जिम्मा दिया गया। यह लोग विद्वान थे, इन्होंने बहुत परिश्रम पूर्वक यह काम किया, लेकिन इनका नजरिया उपनिवेश कालीन यूरोपीय इतिहासकारों से अलग नहीं था''।[1] इस प्रकार हम देखते हैं कि मीरा की उसी छवि को आगे किया उन्होनें कर्नल टाड के इस परियोजना को आगे बढ़ाया

Received: 21.05.2019 **Accepted:** 06.07.2019 **Published**: 06.07.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.02.02.31
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 2.13
ISSN: 2582-2004
Volume 02, Issue 02

गया जो उपनिवेशवादी चिंतक कर्नल टड ने अपने औपनिवेशिक हित के तहत मीरा के छवि निर्मित कर बढ़ाई थी। पुनः माधव हाडा लिखते हैं'' मीरा की असाधारण और पवित्र आत्मा स्त्री, संत, भक्त और रोमनी रहस्यवादी, कवयित्री छवि के निर्माण में जाने अनजाने टाड के भारतीय इतिहास विषयक खास यूरोपी नजरिया और तत्कालीन राजपूताना के मेवाड़, मारवाड़ के सामंतों के संदर्भ में व्यक्तिगत पूर्वाग्रह की निर्णायक महत्वपूर्ण भूमिका रही है''।[2] कमोबेश यही नजरिया अरविंद सिंह तेजावत ने अपने मीरा विषयक अध्ययन में प्रस्तुत किया है और वह कहते हैं कि औपनिवेशिक लेखन के बाद रियासतों के निर्देशन में जो इतिहास लेखन का कार्य हुआ, मीरा का वही पाठ निरंतर रूप से हिंदी आलोचना में भी चला आया। वे लिखते हैं' मिश्र बंधुओं ने अपने इतिहास ग्रंथ' मिश्र बंधु विनोद' मैं मीरा का महत्वपूर्ण उल्लेख किया है। उनका मीरा संबंधी विवरण मुंशी देवी प्रसाद विरचित' 'महिला मृदुवाणी' एवं एनी बेसेंट द्वारा मीरा पर लिखे एक लेख पर आधारित है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में मीरा का जो वर्णन किया है, वह 'मिश्र बंधु विनोद' पर आधारित है। इस प्रकार जो गलतियां मुंशी जी ने की, वही गलतियां मिश्रा बांधो आपने उसके पश्चात आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने दोहरा दी थी''।[3] अतः लंबे समय तक हिंदी भाषी समाज मीरा की जी छवि से परिचित रहा है। वह इसी परियोजना का परिणाम है। जिसमें मीरा रहस्यवादी, रोमानी, भक्त कवयित्री के तौर पर दिखती हैं न कि मध्यकाल में अपने जीवन संघर्षों से जूझती हुई स्त्री की तरह।

मीराबाई के साहित्य और जीवन को मध्यकाल की स्त्री के जीवन और संघर्ष के सिलसिले में देखने का सर्वप्रथम प्रयास प्रगतिशील आलोचना से जुड़े हुए समीक्षकों ने किया। वस्तुतः प्रगतिशील समीक्षा मीरा के जीवन और संघर्ष को सामंती समाज के द्वंद्व और संघर्ष से जोड़कर के देखा है। मीराबाई के जीवन और संघर्ष के इस पहलू पर टिप्पणी करते हुए मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं कि मीरा का साहित्य इस सिलसिले में बाकी भक्त कवियों से एकदम भिन्न ठहरता है क्योंकि मीरा स्त्री होने के साथ ही साथ सामंती परिवार से ताल्लुक रखती थी ''उनकी कविता में एक ओर सामंती समाज में स्त्री की पराधीनता और यातना की अभिव्यक्ति है तो दूसरी ओर उसे व्यवस्था बंदों का पूरी तरह निषेध और उसे स्वतंत्रता के लिए दीवानों की हद तक संघर्ष भी है। उस युग में स्त्री के लिए ऐसा संघर्ष कठिन था, लेकिन मीरा ने अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए कठिन संघर्ष किया। वह राठौर राजकुल की बेटी और सिसोदिया राजकुल की बहू थी जहां सती प्रथा का चलन था। लेकिन विधवा होने के बाद मीरा कुल की रीति और लोक की रूढ़ि के अनुसार सती नहीं हुई वह लगातार लांछन, अपमान और यातना सहती हुई स्वतंत्र रहकर कृष्ण भक्त बनी रही। उन्होंने निर्भय होकर भ्रामक युग धर्म और लोकमत का सामना करते हुए स्पष्ट कहा–भजन करस्यां सती न होशयाँ, मन मोहयो घण नामी।''[4] वस्तुतः मैनेजर पाण्डेय मीरा के व्यक्तित्व में निहित विरोध को सामंतवाद

Received: 21.05.2019 **Accepted:** 06.07.2019 **Published**: 06.07.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 02, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.02.02.31
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 2.13

के विरोध के तौर पर पहचानते हैं। हिंदी आलोचना की प्रगतिशील समीक्षा के क्षेत्र में पहली बार मीराबाई पर स्वतंत्र पुस्तक डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी ने 'मीरा का काव्य' 2015 में लिखा। उन्होंने इस पुस्तक में मीरा के साहित्य का पाठ पूरे भक्ति साहित्य के संदर्भ में विकसित किया है। साथ ही इतिहास, समाजशास्त्र और मध्यकालीन साहित्यिक साक्ष्य के आलोक में मध्ययुगीन स्त्री चित्रों को मीरा के जीवन संघर्षों के हवाले से प्रस्तुत किया है। मीराबाई के विषय में अपनी मान्यताओं को प्रकट करते हुए डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं ''मीरा की व्यथा नारी व्यथा थी, वह भक्त थी अज्ञात प्रियतम की साधना करती थीं। लेकिन वह घर में ही बैठकर साधना करने वाली नहीं थी। वह जब भक्त हो गई तब अपने आप को भक्त मानती थीं। स्त्री या पुरुष नहीं। वहीं से उनके संघर्ष का प्रस्थान समझिए मीरा नारीत्व के बंधन को त्याग कर बाहर आना चाहती थी। समाज की रुढ़िया उन्हें भक्त मानकर व्यक्तिगत साधना के लिए शायद न रोकते। लेकिन राणा कुल की सामंती मर्यादा तोड़ने की आज्ञा उन्हें समाज नहीं दे सकता था। यह भक्ति भावना और सामाजिक रूढ़ियों का द्वंद था। यह द्वंद्व तीव्र इसलिए था क्योंकि मीरा वैसे ही भक्ति भावना को जीवन आचरण में भी उतरना चाहती थी। मीरा नारीत्व से मुक्त होकर भक्त ही रहना चाहती थी।''[5] इसी सिलसिले में डॉ0 शिवकुमार मिश्र कहते हैं कि मीरा के माध्यम से हम मध्यकालीन स्त्री के घुटन, पारिवारिक अत्याचार, सामंती जकड़ बंदी को देखते हैं न सिर्फ देख पाते हैं, बल्कि मीरा सामंती सामाजिक संरचना को नंगा भी करती चलती हैं। डॉ0 मिश्रा लिखते है यह क्या काम है कि मीरा अपने माध्यम से मध्यकालीन समाज में घुटती, नाना प्रकार के सामाजिक अत्याचारों और पारिवारिक यातनाओं को का भी एहसास कराती हैं। उस दुख और उसके कसक को भी अपने माध्यम से वाणी देती हैं, उस समय को नंगा करती हैं। जहां नारी इतनी परवत और इतनी असहाय है कि इसका, समाज के बनाए नियमों के खिलाफ, उठा एक पग भी, उसे भ्रष्ट, जिद्दी और बिगड़ी करार देने के लिए पर्याप्त है, भले ही उसके इस प्रयास के पीछे, उसके अंतर्मन की कितनी ही गहरी, कितनी ही उदास और कितनी पवित्र प्रेरणा क्यों न हो''।[6] मीरा साहित्य के बारे में शिवकुमार मिश्र की महत्वपूर्ण स्थापना यह है कि मीराबाई मध्यकाल में संत भक्त कवि होने के साथ स्त्री भी हैं। उनका स्त्री होना ज्यादा महत्वपूर्ण है न कि उनके भक्त कवि की छवि। क्योंकि उन्होंने एक स्त्री होकर उसे युग की जकड़ बंदी को झेला और उससे संघर्ष किया ''मीरा प्रपत्र की, शरणागत की, इस हद तक पहुंची हुई हैं कि अपने समूचे वजूद को अपने, प्रभु प्रेमी पति पर न्योछावर किए हुए हैं। सारी तन्मयता, सारा समर्पण, सारा त्याग उन्हीं के ओर से हैं भक्ति के स्वर पर वह भक्त के प्रभु के समक्ष इस तरह के एकांत समर्पण की बात समझी जा सकती है, परंतु प्रेमिका या पत्नी के रूप में, प्रियम या पति के प्रति ऐसा समर्पण भाव, ऐसी निर्भरता कुछ हैरान और परेशान करती है। इस नाते की व्यवस्था को ऐसे समर्पण में अपने अनुकूल बहुत कुछ मिल जाने और अपने हित में उसका इस्तेमाल करने की बेहद संभावना है।''[7]

Received: 21.05.2019 **Accepted:** 06.07.2019 **Published**: 06.07.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.02.02.31
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 2.13
ISSN: 2582-2004
Volume 02, Issue 02

मीराबाई के विषय में उपस्थित पाठ के प्रति आख्यान को रचने का काम स्त्री वादी चिंतन ने भी आगे चलकर के किया। इस सिलसिले में कुमकुम संगारी का काम उल्लेखनीय है। मीरा के विषय में कुमकुम संगारी का आख्यान है कि वह मीरा के आख्यान नायिका संत के व्यक्तित्व के बजाय 'ऐतिहासिक चरित्र मीरा' के खोज पर ज्यादा बोल देती हैं। मीराबाई जिस देश और कल में स्थित हैं उसकी ऐतिहासिक सच्चाई सामंती समाज और पितृसत्तामक परिवार व्यवस्था हैं। और इन सब के भीतर मीरा के चरित्र को पहचानने का काम करती हैं। वह लिखती हैं ''मीरा ने चाहे सामंती बंधनो को स्वयं तोड़ना चाहा हो या उन्हें इस

बिलगाव के लिए मजबूर किया गया हो अथवा यहां तक कि इस प्रक्रिया में वह स्वयं को टूट गई महसूस करती हो किंतु यदि सामंती बंधन उनकी स्वतंत्र जीवन शैली के कारण छिन्न भिन्न हुए हो तो उनके गीतों ने इन बंधनों को लाक्षणिक आधार आदर्श बनाकर फिर उभारा है और इस तरह उनकी सर्वव्यापी अनिवार्यता को कम से कम मीरा के लिए तो एक स्वतंत्र विकल्प के रूप में पुनः परिभाषित कर दिया है'' इस प्रकार हम देखते हैं कि कुमकुम संगारी मीरा के व्यक्तित्व में स्वीकार एवं अस्वीकार के द्वंद्व को पहचानती हैं। वह यह कि पुनः मीरा की भक्ति भावना पित्तृसत्ता से सामंजस्य और विसंगति दोनों को एक साथ लेकर के चलती है। पुनः कुमकुम संगारी का कहना है'' जिस सामाजिक व्यवस्था को वह जानती हैं उनके कुछ दमनकारी तत्वों को पहचानती हैं उससे दूर वह चिक पाती है, किंतु उसके वास्तविक वितान को छिन्न–भिन्न किए बिना ही उनके प्रतीक व्यवस्था के साथ निरंतर अंतर संवाद बनाए रखते हैं। विस्तृत और सामंती राज्य के संबंध का हाल की व्यवहार में विरोध किया गया है। किंतु प्रतीक रूप में वह संबंध अक्षय बना रहता है। इस अधूरेपन की बजाय यदि मीरा संपूर्ण रूप से जानकारी देती तो क्या वह उनकी बुद्धि का पर्यापक होता''[9] इस प्रकार कुमकुम संगारी की नजर में यह मीरा की सीमा है। वस्तुतः यह सीमा केवल मीरा की ही नही है अपितु यह पूरे भक्ति साहित्य की सीमा है जहाँ भक्ति के धरातल पर समता कायम होती है लेकिन उसका सामाजिक–सांस्कृतिकरण नहीं हो पाता है।

सन्दर्भ

1. पचरंग चोला पहर सजीरी, माधव हाड़ा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ0 135
2. वहीं, पृ0 143

Received: 21.05.2019 **Accepted:** 06.07.2019 **Published**: 06.07.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.02.02.31
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 2.13
ISSN: 2582-2004
Volume 02, Issue 02

3. मीरा की भक्ति और राजनीति, अरविंद सिंह तेजावत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ0 107
4. भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2003, पृ0 27
5. मीरा का काव्य, विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृत्ति 2019, पृ0 75
6. भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य, शिवकुमार मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2012, पृ0 246
7. वहीं, पृ0 206
8. मीराबाई और भक्ति की आध्यात्मिक अर्थनीति, कुमकुम संगारी, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, आवृत्ति 2016, पृ0 61
9. वहीं, पृ0 61

Received: 21.05.2019 **Accepted:** 06.07.2019 **Published**: 06.07.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.